Dr. Rajeev Kr. Tripathi

MALTHUSIAN THEORY OF POPULATION

1766-1834

माल्थस इंग्लैंड के प्रमुख जनसंख्याशास्त्रियों में थे। माल्थस की शिक्षा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हुई जहां उन्होंने नीतिशास्त्र, गणित और धर्मशास्त्र का अध्ययन किया।

माल्थस का 1798 में एक गुमनाम निबन्ध Essay on the principles of population as it Effects the future Improvement of Society प्रकाशित हुआ जिससे पूरी दुनिया में सनसनी फैल गयी और तभी से जनसंख्या-समस्या ने संपूर्ण विश्व का ध्यान आकर्षित किया।

1803 में इस निबन्ध का द्वितीय संस्करण जिसमें लेखक का नाम माल्थस लिखा हुआ प्रकाशित हुआ जो "An essay on the Principles of population or a View of its past and present Effects on Human Happiness नामक शीर्षक से प्रकाशित हुआ।

अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ —

1. Observations on the effects of the Corn Laws (1814 में)
2. Nature & progress of Rent 1815
3. The Poor Law 1817
4. Measure of Value 1823
5. Definitions in Political economy

1805 में माल्थस ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एक महाविद्यालय हैलबरी कालेज में इतिहास और राजनैतिक अर्थशास्त्र के प्राध्यापक के पद पर कार्य करना प्रारम्भ किया और इस पद पर वह जीवन-पर्यन्त 1834 तक रहा।

माल्थस के जनसंख्या सम्बन्धी विचारों के प्रेरक कारक

① इंग्लैण्ड की बिगड़ती आर्थिक स्थिति

इंग्लैण्ड में अकाल, बीमारियां, गरीबी, गन्दगी व बेरोजगारी जैसे संकट चारों ओर दृष्टिगोचर हो रहे थे। और 18 वीं शती के उत्तरार्द्ध तक कृषि की दशा बिगड़ती जा रही थी। इन कारणों से जनसंख्या का दबाव बढ़ने लगा।

② औद्योगिक क्रान्ति-

माल्थस औद्योगिक क्रांति के बाद के काल के थे जिस

समय एक तरफ पूंजीपति वर्ग था और दूसरी तरफ श्रमिक। उस समय पूंजीवादी व्यवस्था के अनेक दोष उभर कर सामने आये जैसे आर्थिक असमानता का विषम रूप, बेकारी, निर्धनता, भुखमरी, व्यापारिक जगत में तीव्र उथल-पुथल, शोषण आदि देश की सारी जनता, जनसंख्या और खाद्य सामग्री के असन्तुलन से पीड़ित थी माल्थस जनसंख्या के संकटों के बारे में सोचने लगे।

③ वणिकवादी और निर्बन्धवादी अर्थशास्त्रियों के विचार – इन अर्थशास्त्रियों ने जनसंख्या को आर्थिक, राजनैतिक व सैनिक दृष्टि से उचित ठहराया था। माल्थस का विचार इन आशावादी विचारों की प्रतिक्रिया था।

④ माल्थस पर समकालीन विचारों का प्रभाव – मैथ्यू हेल, डेविड ह्यूम, जोसेफ टाउन, साउण्ड सर वाल्टर रैले तथा रावर्ट वैलास आदि प्रमुख हैं। मैथ्यू हेल ने The Primitive organisation of mankind में ज्यामितिक अनुपात में वृद्धि की बात करते हैं।

⑤ गाडविन की पुस्तक का प्रभाव → "Enquiry concerning Political Justice and its influence on morals and Happiness" 1793 में गाडविन ने जनसंख्या की वृद्धि को गलत नहीं माना उनका मानना था कि समाज स्वयं ही जनसंख्या को उसी उस सीमा तक रखता है जिस सीमा तक साधन होते हैं। माल्थस ने इसे ~~काल्पनिक~~ बेकार की काल्पनिक माना और ~~गाडविन के विचार को गलत माना~~।

माल्थस के लिए उपर्युक्त तात्कालिक परिस्थितियां और जनसंख्या सम्बन्धी आशावादी विचार चुनौतीपूर्ण प्रमाणित हुए। इन्हीं चुनौतियों ने माल्थस को जनसंख्या पर लेख लिखने की प्रेरणा प्रदान की। जे. जीड ने लिखा है कि माल्थस का निबन्ध एक शताब्दी के बाद भी वाद विवाद की यह प्रतिध्वनि जो इस निबन्ध ने उत्पन्न की थी, पूर्ण तथा समाप्त नहीं हुई है, इस निबन्ध को उपाधि का उत्तर भी समझा जा सकता है वह इसलिए कि एडम स्मिथ ने अपनी पुस्तक का नाम An Enquiry into the Nature and Causes of Wealth of Nations रखा था। जबकि जेम्स बोनर के अनुसार माल्थस का अपने निबन्ध का नाम An Essay on the Causes of Poverty of Nations रखना चाहिए। वस्तुतः माल्थस की पुस्तक एडम स्मिथ के विचारों की चुनौती थी। **माल्थस के मुख्य विचार** निम्न शीर्षकों के अंतर्गत रखा जा सकता है-

① Theory of Populations ② food import and protection
③ Theory of economic Development
④ Theory of Values
⑤ Theory of distributions

माल्थस का जनसंख्या का सिद्धान्त

Rajveesh

An Essay on the Principle of Population (1798) में अपने लेख में इसने अनेक तात्कालिक परिस्थितियों यूरोपीय देशों की बढ़ती हुई जनसंख्या तथा इससे उत्पन्न दुष्परिणाम से आतंकित होकर [struck out] प्रतिपादन किया।

सिद्धान्त की प्रमुख बातें

① **मान्यताएं**

(i) मानव में कामवासना स्वाभाविक ही नहीं, अपितु स्थिर है, इसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध सन्तानोत्पत्ति से है।

(ii) मनुष्य के जीवन निर्वाह व अस्तित्व की रक्षा के लिए खाद्य-सामग्री अनिवार्य है।

(iii) आर्थिक सम्पन्नता और सन्तानोत्पत्ति के मध्य सीधा और घनिष्ठ सम्बन्ध है।

(iv) कृषि में उत्पत्ति ह्रास नियम क्रियाशील होता है।

② **जनसंख्या ज्यामितिक अनुपात से बढ़ती है** – माल्थस कहता है कि जनसंख्या ज्यामितिक दर से 2, 4, 8, 16, 32, 64, क्रमशः बढ़ती है अगर इसे रोका न गया तो जनसंख्या 25 वर्षों में दुगुनी हो जायेगी।

आपके अनुसार "जिविका प्रदान करने वाली भूमि की शक्ति की तुलना जनसंख्या वृद्धि की शक्ति अनन्त है।"

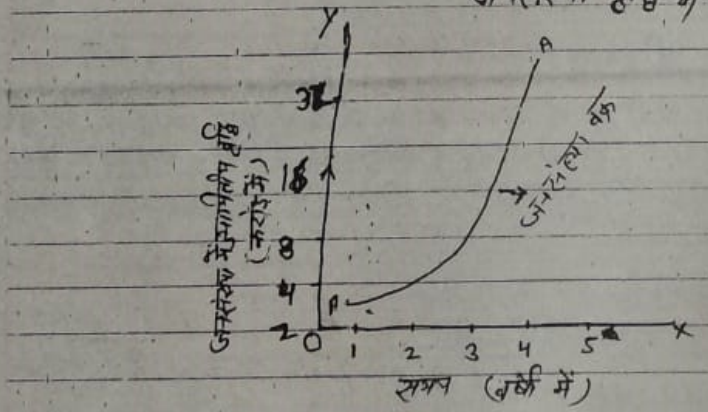

जनसंख्या में होने वाली ज्यामितीय दर से वृद्धि का रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शन।

③ **खाद्य सामग्री में वृद्धि अंकगणितीय अनुपात में होती है** – मानव के जीवन और अस्तित्व के लिए भोजन आवश्यक है लेकिन जिस दर से जनसंख्या में वृद्धि होती है उस दर से खाद्य-सामग्री में वृद्धि नहीं होती है। खाद्य-सामग्री में तो समानान्तर अर्थात गणितीय अनुपात में ही वृद्धि होती है क्योंकि कृषि उपज में **'उत्पत्ति-ह्रास नियम'** लागू होता है अर्थात जैसे-जैसे खेत में फसल उगाने का क्रम बढ़ता जाता है वैसे-वैसे क्रमानुसार कृषि उत्पादन घटता जाता है। खाद्य सामग्री के गणितीय अनुपात को इस प्रकार रखा जा सकता है – 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, आदि क्रम से। माल्थस के शब्दों में "प्रतिबन्ध

बातें समान रहें, तो प्रकृति द्वारा "मानवीय आहार धीरे-धीरे संकगणितीय अनुपात में बढ़ता है और मानव एवं तेजी से ज्यामितीय अनुपात में बढ़ता है।"

रेखाचित्र द्वारा →

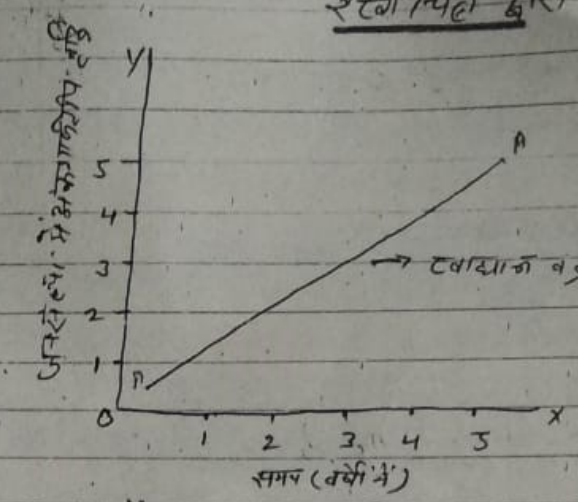

④ **जनसंख्या और खाद्य-सामग्री में असंतुलन** — चूँकि जनसंख्या में वृद्धि ज्यामितीय दर से होती है अतः इसकी तुलना में गणितीय दर से बढ़ने वाली खाद्य-सामग्री पीछे रह जाती है। खाद्य-सामग्री और जीवन स्तर में वृद्धि के साथ जनसंख्या बढ़ती है। उसने स्वयं लिखा है, "Prosperity was not to depend on papulation, but papulation was to depend on prosperity."

जनसंख्या पर प्रतिबन्ध

माल्थस ने जनसंख्या नियन्त्रण के दो प्रकार के प्रतिबन्धों का उल्लेख किया है—

माल्थस के शब्दों में, "जो निरोध जनसंख्या को जीवन-निर्वाह के साधनों के स्तर तक सीमित रखते हैं, वे प्राकृतिक और कृत्रिम हैं।"

(अ) कृत्रिम अवरोध अथवा प्रतिबंधक निरोध (Preventive checks)

कृत्रिम अथवा प्रतिबंधक निरोध के अन्तर्गत वे सारे उपाय आते हैं, जिनका प्रयोग मनुष्य अपने विवेक से जन्म-दर को रोकने के लिए करता है जैसे- बड़ी उम्र में विवाह, संयम का जीवन, ब्रम्हचर्य, विभिन्न प्रकार के संतति-निग्रह (Birth control) के साधनों का प्रयोग, आदि।

कृत्रिम अवरोध के अन्तर्गत दो प्रकार के उपाय आते हैं:

(i) **नैतिक प्रतिबन्ध** - संयम, ब्रम्हचर्य आदि।

(ii) **कृत्रिम साधन** - संतति-निग्रह के साधनों का प्रयोग। इसे माल्थस ने पाप (Sin) कहा है।

(ब) प्राकृतिक-अवरोध या नैसर्गिक-निरोध (Positive checks) — अकाल, महामारी, भूकम्प, बाढ़ आदि प्राकृतिक आपत्तियाँ और दैवी प्रकोप इसके अन्तर्गत आते हैं। इस निरोध के द्वारा मृत्यु दर बढ़ती है और जनसंख्या में कमी आती है और खाद्यान्न और जनसंख्या

के साथ संतुलन स्थापित हो जाते हैं। चूंकि मनुष्य की बढ़ने की स्वाभाविक इच्छा शीघ्र कार्य करने लगती है और जनसंख्या पुनः बढ़कर खाद्यान्न की पूर्ति से अधिक हो जाती है। प्राकृतिक प्रतिबंध पुनः क्रियाशील हो जाते हैं, फलतः पुनः खाद्यान्न के साथ संतुलन स्थापित हो जाता है। घटनाओं का यह कुचक्र चलता रहता है, जिसमें फंसकर जनसंख्या बढ़ती रहती है। इस कुचक्र को **"माल्थूसियन-चक्र"** कहते हैं।

" Malthusian Cycle "

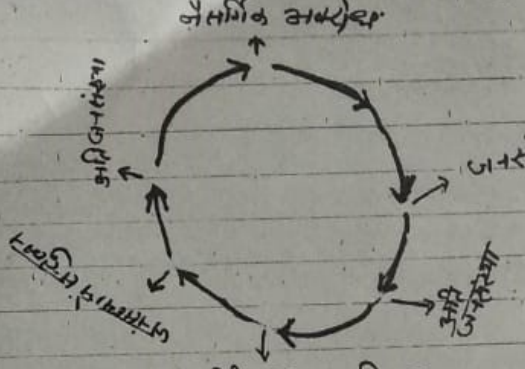

संक्षेप में माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त में तीन बातें प्रकट होती हैं:

1. प्रत्येक देश की जनसंख्या खाद्य पदार्थों की पूर्ति की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ती है।
2. यदि मानव कृत्रिम उपायों द्वारा जन्म दर को कम नहीं करता, तो प्रकृति मृत्यु दर बढ़ाकर जनसंख्या पर रोक लगाती है।
3. नैसर्गिक प्रतिबंध कष्टदायक होते हैं, इसलिए मानव को प्रतिबंध अवरोध या कृत्रिम अवरोध अपनाने चाहिए

माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त रेखा-चित्र द्वारा

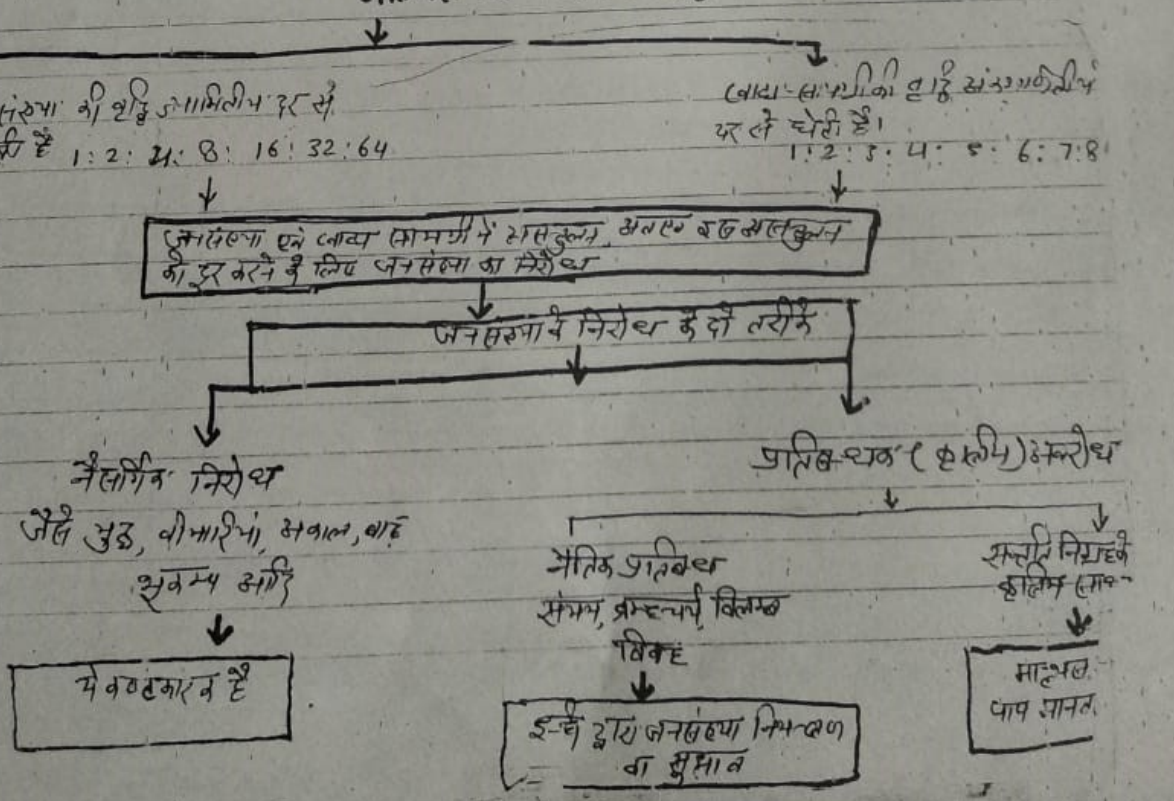

ना यह गलत मान्यताओं पर आधारित है -

(2) जनसंख्या वृद्धि का अर्थ है - ज्ञान की वृद्धि में ह्रास है।

(3) ~~केवल कृषि को उत्पादन ही उत्पादन क्षेत्र माना है जो कि गलत है~~

(4) इतिहास ने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि 25 वर्ष की अवधि में जनसंख्या दुगुनी नहीं होती।

(6) यह सदैव हानिकारक ही नहीं होती

(7) संयम की बात व्यवहारिक नहीं है।